अ ध्या य पहला

कबीर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

कबीर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व —

कबीर का व्यक्तित्व —

कबीर हिन्दी-साहित्य के श्रेष्ठतम, अलौकिक शक्तिपुंज हैं। वह वाणी के उन वरद पुत्रों में हैं, जिनकी प्रतिमा के प्रकाश से हिन्दी साहित्याकाश सदा आलोकित रहेगा। कबीर मध्ययुग के श्रेष्ठ कवियों में से हैं, इसके अतिरिक्त वह एक अच्छे समाजशास्त्री भी समझे जाते हैं। किसी साहित्यकार के कृतित्व को समझने के लिए उसके व्यक्तित्व का अध्ययन अत्यन्त सहायक और आवश्यक होता है।

जन्म —

कबीर जी के जन्म और मरण-तिथियों के विषय में साहित्यकारों ने अलग-अलग मत प्रकट किए हैं। उन्होंने जो कुछ भी लिखा है, सब जनश्रुतियों के आधार पर है। ' डॉ. हंटर ने इनका जन्म संवत् १४३७ में और रेवरेन्ड वेस्टकौट ने संवत् १४९७ माना है। '[१]

कबीर-पंथियों में उनका जन्म संवत् १४५५ माना गया है। ' कबीर ग्रंथावली में १४५५ वि. ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा सोमवार को उनकी जन्म-तिथि स्वीकार की गई है, जिसका आधार निम्नांकित दोहा है —

' चौदह सौ पचपन साल गए, चंद्रवार एक ठाठ ठए।
जेठ सुदी बरसायत को पूरनमासी तिथि प्रगट भए ।। '[२]

यह दोहा कबीरदास के प्रधान शिष्य और उत्तराधिकारी धर्मदास का है, जिसके अनुसार उपर्युक्त तिथि स्वीकार की गई है। इसके अतिरिक्त डॉ. रामलाल वर्मा और डॉ. रामचन्द्र वर्मा अपनी पुस्तक ' युग पुरुष कबीर ' में लिखते हैं —

' डॉ. माताप्रसाद गुप्त ने श्री एस.आर.पिल्ले की ' इण्डियन क्रोनोलाजी ' के आधार पर गणित करके यह स्पष्ट कर दिया है कि सं.१४५५ की ज्येष्ठ पूर्णिमा को सोमवार ही पड़ता है जबकि १४५६ की ज्येष्ठ पूर्णिमा को तो मंगलवार पड़ता है। '[3]

इसलिए विश्वास किया जाता है कि कबीरदास जी का जन्म सं.१४५५ में ठीक सिध्द होता है।

<u>जन्म-स्थान</u> —

जिस प्रकार कबीर जी की जन्म-तिथि निश्चित करना अति कठिन है, ठीक उसी प्रकार उनके जन्म-स्थान के बारेमें भी निश्चित स्थान ज्ञात करना मुश्किल पड़ता है। साहित्यकारों ने अपना - अपना मत प्रकट किया है। डॉ. रामकुमार वर्मा और डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत ने कबीर का जन्म - स्थान ' मगहर ' माना है। डॉ. श्यामसुन्दर जी ने कुछ अन्त:साक्ष्यों के आधार पर उनका जन्म-स्थान ' काशी ' स्वीकार किया है।

इनके अतिरिक्त ' एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका ' में जिसका आधार ' कबीर ग्रंथावली ' है, उनका जन्म - स्थान ' काशी ' ही माना है। '[4]

इनके अतिरिक्त दूसरी निम्नलिखित उक्ति है जो कबीर जी का जन्म - स्थान सिध्द करती है —

' काशी में हम प्रकट भये हैं रामानंद चेताए। '[5]

' कबीर जी के दो शिष्य धनी धर्मदास और गरीब दास ने भी कबीर को काशी वासी ही स्वीकार किया है। '[6]

उपर्युक्त तथ्यों से यही साबित होता है कि कबीर का जन्म ' काशी ' में ही हुआ था, जिसे आजकल ' वाराणसी ' कहते हैं।

मृत्यु —

कबीर जी की मृत्यु सम्वत् १५७५ में मगहर में हुई थी, जो पश्चिमी उत्तर प्रदेश में है। बताया जाता है कि मृत्यु के समय उनकी आयु १२० वर्ष की थी। उनके जन्म और मृत्यु तिथियों के आधार पर उनकी आयु १२० वर्ष बिल्कुल ठीक सिध्द होती है। निम्नलिखित दोहा जो उनके जन्म और मृत्यु तिथियों के बारेमें कहा गया है, वह भी इसी बात की पुष्टि करते हैं ——

" संवत् पंद्रह सौ पछत्तरा, कियो मगहर को गवन।
माघ सुदी एकादशी, रलो पवन में पवन ।। "[७]

इससे यही सिध्द होता है कि कबीर की मृत्यु सम्वत् १५७५ में मगहर में हुई थी।

जाति और माता-पिता —

बालक की जाति और धर्म माता-पिता पर निर्भर करता है। माता-पिता जिस जाति और धर्म के होते हैं, बालक उसी जाति का माना जाता है। जन्म के पश्चात् उसकी वही जाति आगे जीवन भर चलती है। जहाँ तक कबीर की जाति व धर्म का प्रश्न है उनके असली माता-पिता के बारेमें संशोधक आज तक इस बात का प्रमाण नहीं दे पाए हैं कि उनके असली माता-पिता कौन थे।

उनके विषय में कबीर पंथियों में स्वामी रामानन्द के आशीर्वाद से विधवा ब्राह्मणी पुत्रकी होने की जो कहानी प्रचलित है, वह अवैज्ञानिक तथा निराधार है। कबीर ने भी अपने माता-पिता के बारेमें कहीं भी उल्लेख नहीं किया है। हाँ, उन्होंने अपने बारेमें जुलाहा ही कहा है ——

" तू ब्राह्मण में काशी का जुलाहा ।"[८]

इससे यही सिध्द होता है कि कबीर की जाति जुलाहा ही थी। कबीर जी का पालन - पोषण मुसलमान जुलाहा नीरु और नीमा के द्वारा किया गया

था। पालन-पोषण के कारण नीरु और नीमा ही इनके माता-पिता कहलाए। यह बात अलग है कि उनकी वाणी से, गुरु रामानन्द से, उनके शिष्यों से और उनके भक्तों से — जो आज के जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाना, चण्डीगढ और दिल्ली तक फैले हुए हैं — पता चलता है कि वह हिन्दू धर्म से सम्बन्ध रखते हैं और कबीर जी का झुकाव हिन्दू धर्म की ओर संकेत करता है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि वह हिन्दू और मुसलमान धर्म के बीच की दीवार को मिटाना चाहते थे और जात-पाँत के भी सख्त विरोधी थे। मनुष्यों को वे सिर्फ इन्सान समझाते थे। वह एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे, जिसमें कोई ऊँच-नीच न हो।

शिक्षा —

जहाँ तक कबीर के विद्याध्ययन और पुस्तक ज्ञान का सम्बन्ध है, उसमें वे बिल्कुल कोरे थे। उन्होंने नि:संकोच रूप से यह बात स्वीकार भी की है।

"मसि कागद छूवों नहीं, कलम गहों नहिं हाथ।
चारिउ जुग के महात्मा, कबीर मुखही जनाई बात।।"[१]

वह पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे, परन्तु उनका जीवन-अध्ययन बहुत गहरा था और साधु-सन्तों के सम्पर्क से उनको ज्ञान का बहुत बड़ा अंश प्राप्त हुआ था। वह अशिक्षित तो थे, परन्तु अन्दर से महान तत्वज्ञानी थे। इन्हीं कारणों से वह मध्ययुग के दार्शनिक थे। इसके साथ वह सामाजिक उपदेशक भी थे।

गुरु —

कबीर रामानन्द के शिष्य थे। काशी में कबीर रामानन्द के पास गए। कबीर के मुसलमान होने के कारण उन्होंने पहले तो उन्हें शिष्य बनाना स्वीकार नहीं किया। वे हताश तो बहुत हुए, परन्तु उन्होंने एक चाल चली। प्रात:काल अन्धेरे ही में रामानन्द पंचगंगा घाट पर हर रोज स्नान करने के लिए जाते थे। कबीर पहले से ही उनके रास्ते में घाट की सीढ़ियों पर लेटे रहे। रामानन्द जैसे

ही स्नान करने आए, वैसे ही उनके पैर की ठोकर कबीर के सिर में लगी। ठोकर लगने के साथ ही रामानन्द के मुख से पश्चाताप के रूप में ' राम ' शब्द निकल पड़ा। कबीर ने उसी समय उनके चरण पकड़ कर कहा, महाराज, आज से आपने मुझे ' राम नाम ' से दीक्षित कर अपना शिष्य बना लिया। आज से आप मेरे गुरू हुए। रामानन्द ने प्रसन्न होकर कबीर को गले से लगा लिया। उसी समय से कबीर रामानन्द के शिष्य कहलाने लगे।

" काशी में हम प्रकट भये हैं रामानन्द चेताए ",

कबीर का यह वाक्य इस बात के प्रमाण में प्रस्तुत किया जाता है कि रामानन्द जी उनके गुरू थे। "१०

प्राचीन विद्वानों ने कबीर को रामानन्द का शिष्य माना है। तर्क के आधार पर पूर्णतय सिद्ध हो जाता है कि कबीर दास जी रामानन्द के ही शिष्य थे। उनकी सारी विचारधारा स्वामी रामानन्द से प्रभावित है।

पत्नी और परिवार —

कबीर सन्त महात्मा होते हुए भी गृहस्थ थे। उन्होंने वैवाहिक जीवन व्यतीत किया था तथा उनके सैंतान भी थी। उनकी पत्नी का नाम लोई था। कुछ विद्वान लोई को कबीर की शिष्या भी मानते हैं। वह एक बनखण्डी बैरागी की परिपालित कन्या थी। वह उस बैरागी को स्नान करते समय लोई में लपेटी और टोकरी में रखी हुई गंगा में बहती हुई मिली थी। ' लोई ' जिसका अर्थ एक तरह का ऊनी कंबल है, जो उत्तर भारत में सर्दियों में ओढ़ने के काम आती है।

' लोई ' कहीं से भी मिली हो, परन्तु वही कबीर की पत्नी थी। " कबीर की पत्नी न धनिया थी और न ही उनका किसी वेश्या से कोई सम्बन्ध था। "११

यह सब बातें गढ़ी गई हैं जिनका कोई ठोस आधार नहीं है।

कहते हैं कि उनके एक पुत्र था, जिसका नाम कमाल और पुत्री का कमाली था। पुत्री के बारे में तो कबीर जी ने कुछ नहीं कहा है, लेकिन पुत्र कमाल उनके सिध्दांतों का विरोधी था और इसी कारण कबीर ने कहा है ——

"बूड़ा बंस कबीर का उपज्यो पूत कमाल ।
हरि का सिमरन छाड़ि के घर ले आया माल ।। "[१२]

" महात्मा कबीर परम सन्तोषी, उदार, स्वतन्त्रचेता, निर्भीक, सत्यवादी, अहिंसा, सत्य और प्रेम के समर्थक, सात्त्विक प्रकृति के बाह्याडंबर-विरोधी तथा क्रान्तिकारी सुधारक थे। वह मस्तमौला, लापरवाह एवं फक्कड़ फकीर थे। वे जन्मजात विद्रोही थे और उनमें एक अदम्य साहस तथा अखंड आत्म-विश्वास था। वे तीक्ष्ण प्रतिभा तथा विलक्षण, अथक, सशक्त व्यक्तित्व से सम्पन्न थे। वे सिकन्दर लोदी के सामने झुके नहीं, हिन्दू और मुसलमानों के प्रबल रोष ने उन्हे तनिक भी विचलित नहीं किया, वे योगियों के प्रभाव से आहत नहीं हुए और न ही सूफी उन्हें अपने सम्प्रदाय में मिला सके। "[१३]

कबीर का कृतित्व —

कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे, इसलिए उन्होंने लिखा कुछ नहीं है। उन्होंने तो गाया है और गाकर जीवन-जगत की अन्यतम अनुभूतियों और विचार - शृंखलाओं को सहज ढंग से अभिव्यक्त किया है। कबीर का गाया हुआ, जिन्होंने कंठस्थ किया है, आज उसी का संग्रह किया गया है।

प्रामाणिक कृतियाँ —

कबीर की प्रामाणिक कृतियों का अनुसंधान अत्यन्त कठिन कार्य है। उन्होंने स्वयं अपनी वाणी को लिपिबध्द नहीं किया था। उनके शिष्यों ने कुछ को लिपिबध्द किया और कुछ लोगों ने जबानी याद रखा। उसका स्वरूप धीरे-धीरे बदलता रहा। कबीर पंथी सन्तों ने अपनी रचनाओं को भी कबीर के नाम से प्रसारित किया। कबीर-वाणी को कबीर पंथी वाङ्मय से अलग करना कोई सहज साध्य बात नहीं है। इसी कारण कबीर के ग्रन्थों की संख्या ८२ तक मानी जाती

हैं। मिश्रबन्धु कबीर के ग्रंथों की संख्या ७५ से ८४ तक मानते हैं तो `कबीर एण्ड हिज फालोवर्स` में डॉ.एफ.ई.के ने इनकी संख्या ३८ मानी है। नागरी प्रचारिणी सभा ने १९५५ ई.तक के खोज-विवरण के आधार पर वह संख्या १५८ मानते हैं। श्री विल्सन अपने `रेलिजस सेक्ट्स आफ दी हिन्दूज` में कबीर की सिर्फ आठ रचनायें मानते हैं —

(१) आनन्द राम सागर

(२) बलख की रमैनी

(३) चाचरा

(४) हिंडोला

(५) झूलना

(६) कबीर पंजी

(७) कहरा

(८) शब्दावली ।[१४]

कबीर साहित्य पर कई प्रामाणिक संस्करण करने की महत्वपूर्ण प्रयास किये गये हैं, जैसे —

(१) कबीर वचनावली (१९१६ ई.), सं.अयोध्या सिंह उपाध्याय - -`हरिऔध`

(२) कबीर ग्रन्थावली (१९२८ ई.), सं.बाबू श्यामसुन्दर दास

(३) संत कबीर (सन् १९४३ ई.), सं.डॉ.रामकुमार वर्मा

(४) कबीर ग्रन्थावली (सन् १९६१ ई.), सं.डॉ.पारसनाथ तिवारी

(५) कबीर ग्रन्थावली (सन् १९६९ ई.), सं.डॉ.माताप्रसाद गुप्त

(६) कबीर बीजक (सन् १९७१ ई.), सं.डॉ.शुकदेव सिंह

(७) रमैनी (सन् १९७४ ई.), सं.जयदेव सिंह, वासुदेव सिंह।[१५]

१. <u>कबीर वचनावली</u> (सं.अयोध्यासिंह उपाध्याय ' हरिऔध ')

इसका सम्पादन महाकवि अयोध्यासिंह उपाध्याय ' हरिऔध ' ने किया है। इस संग्रह का आधार हरिऔध के अनुसार ' कबीर बीजक ' ' चौरासी अंग को साखी ' आदि है। विद्वानों ने इस संग्रह की भी बड़ी प्रशंसा की है। वचनावली में ७८१ साखियाँ और २२८ पद संगृहीत हैं।

२. <u>कबीर ग्रन्थावली</u> (सं.श्यामसुन्दर दास)

इस ग्रन्थावली का संपादन दो प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर किया गया है। पहली प्रति संवत् १५६१ की लिखी हुई है। दूसरी संवत् १८८१ की। दोनों प्रतियों में पाठभेद बहुत कम पाया गया है। परवर्ती प्रति में १३१ दोहे और ५ पद अधिक थे। संवत् १५६१ की प्रति की प्राचीनता के सम्बन्ध में विद्वानों ने संदेह प्रकट किया है। जैसे ——

' (१) प्रति की पुष्पिका शेष ग्रंथ की लिखावट से भिन्न है। उसके अक्षर अपेक्षाकृत बड़े और मोटे हैं।

(२) मूल ग्रन्थ के बाद समाप्ति की सूचना —' इतिश्री कबीर जी की वाणी संपूर्ण समाप्त ' देने के बाद फिर ' संपूर्ण संवत् १५६१ लिप्यकृत वाणारस मध्य प्रेमचन्द पटनार्थ ... आदि ' के रूप में पुष्पिका देना संगत नहीं प्रतीत होता। अत: यह अंश बाद को बढ़ाया हुआ प्रतीत होता है।

(३) संकलित साखियों और पदों की मात्रा से यह नहीं प्रतीत होता कि यह प्रति बनारस में लिखी गई है। ' [१६]

' कबीर ग्रन्थावली ' में ८०९ साखियाँ,४०० पद और ७ रमैनियाँ संगृहीत हैं।

३. संत कबीर (डा. रामकुमार वर्मा) —

इसका सम्पादन डॉ.रामकुमार वर्मा ने ` ग्रन्थ साहब ` के आधार पर किया है। उन्होंने बड़ी सावधानी के साथ ` ग्रन्थ साहब ` में दी हुई कबीर की वाणियों का संकलन किया है ` ग्रन्थ साहब ` की प्रामाणिकता के बारे में सन्देह उठाने की कोई गुंजाइश नहीं है। यह सिक्खों का धर्मग्रन्थ है। उसका संकलन पाँचवें गुरु श्री अर्जुनदेव ने सन् १६०४ में किया था। निश्चय ही सन् १६०४ का यह पाठ प्रामाणिक होगा।

इसमें २४३ ` सलोक ` (साखियाँ) और २२८ पद संकलित है।

४. कबीर ग्रन्थावली (डा.पारसनाथ तिवारी)

` कबीर ग्रन्थावली ` का संपादन डा. पारसनाथ तिवारी ने किया है। उन्होंने कबीर के नाम से प्रचलित प्रतियों की बड़ी संख्या में से ५ प्रतियाँ दादूपंथी शाखा की, एक प्रति निरंजनी शाखा की, एक गुरु ग्रन्थ की, २ बीजक की, २ शब्दावलियों की, ३ साखियों की, १ सर्वंगी की, १ गुणगंजनामा की और १ आर्चर्य सैन की अर्थात् ९ शाखाओं की कुल १७ प्रतियों को चुनकर उनका तुलनात्मक अध्ययन किया और कबीर-वाणी का यथासंभव प्राचीनतम और प्रामाणिकतम पाठ निर्धारित करने की कोशिश की है।

डा.पारसनाथ तिवारी ने अपनी ग्रन्थावली में २०० पदों, ७४४ साखियों और २१ रमैनियों को स्थान दिया है।

५. कबीर ग्रन्थावली (डा.माताप्रसाद गुप्त)

डा.माताप्रसाद गुप्त ने ` कबीर ग्रन्थावली ` प्रस्तुत करते हुए कबीर वाणी को उसी परम्परा की सर्वाधिक प्राचीन स्थिति का पाठ दिया है, जिसका उपयोग बाबू श्यामसुन्दर दास के संस्करण में हुआ है। डा.माताप्रसाद गुप्त ने ` कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ,आगरा ` की सं.१७५२ की एक प्रति को आधार बनाकर अपनी ग्रन्थावली में अपेक्षाकृत प्राचीन और शुद्ध पाठ देने का प्रयत्न किया है।

इस प्रति में, उसमें बाबू श्यामसुन्दर दास द्वारा संपादित ग्रन्थावली से एक साखी अधिक थी, किन्तु १९ पद कम थे। माताप्रसाद गुप्त जी ने इन उन्नीस पदों को अपनी ग्रन्थावली की पाद-टिप्पणियों में दे दिया है और एक साखी को स्वीकृत पाठ में समाविष्ट कर दिया है। इस प्रकार डा.माताप्रसाद गुप्त के संस्करण में बाबू श्यामसुन्दर दास के संस्करण के समस्त छन्द अपने शुध्द पाठ के साथ मिल जाते हैं।

६. कबीर बीजक (डा.शुकदेव सिंह)

' कबीर बीजक ' के सम्पादक डा.शुकदेव सिंह जी हैं। कबीर वाणी के प्रामाणिक स्वरुप को निर्धारित करते हुए विद्वानों ने प्रारम्भ से ही ' बीजक ' का महत्व स्वीकार किया था। वेस्टकाट साहब ने अनुमान लगाया था कि इसका सम्पादन सन् १५७० ई.में हुआ होगा।

' डा.शुकदेव सिंह ने बीजक के विभिन्न हस्तलेखों और उनके आधार पर मुद्रित ४० संस्करणों की विस्तृत जाँच - पड़ताल के बाद उन्हें ४ समुच्चयों में बाँटा है — (१) दानापुर समुच्चय, (२) फतुहा समुच्चय, (३) मगताही समुच्चय, ' अ ', (४) मगताही समुच्चय ' ब '। डा.सिंह का मत है कि इन चारों में भी ' मगताही ' ' अ ' समुच्चय अपेक्षाकृत प्राचीन है इसमें प्रक्षेप क्रिया कम हुई है। '[१७]

डा. शुकदेव सिंह की मान्यता है कि ' कबीर की मूलभाषा की कल्पना पूर्वी भाषा के रुप में होनी चाहिए। '[१८]

डा.शुकदेव सिंह की मान्यता है कि कबीर का प्राय: प्रामाणिक साहित्य प्रत्यक्ष तथा सांप्रदायिक रुप में ' बीजक ' में ही मिलता है।

७. रमैणी (डा. जयदेव सिंह ' वासुदेव सिंह)

विद्वान संपादकों ने ' हिन्दी के छात्रों का अध्ययन साखियों और पदों तक ही सीमित न रह जाय, वे रमैनियों के अध्ययन में भी प्रवृत्त हों, ' यह सोचकर सबसे पहले रमैनियों का सम्पादन किया गया।

रमैनी शब्द रामायण का परिवर्तित रूप है और इसका अर्थ राम के यश का वर्णन है। कबीर ने वर्णनात्मक पद्य के लिए ही इस शब्द का प्रयोग किया है। उन्होंने राग सूही का वर्णन भी किया है। इसमें भगवान् की प्रशंसा के उपरान्त काजी पण्डित से सन्यासी आदि तक के कर्तव्य की चर्चा की गई है। मानव जाति की एकता के साथ-साथ माया के जाल में फंस कर मनुष्य को जो कष्ट उठाने पड़ते हैं, उसका वर्णन भी किया है।

कबीर साहित्य में कुछ न कुछ प्रक्षेप सभी परम्पराओं के पाठों में मिलता है। प्रमुखतया राजस्थानी पाठ परम्परा, पंजाबी पाठ परम्परा तथा पूर्वी (अवधी) पाठ परम्परा पाई जाती हैं। राजस्थानी और पंजाबी परम्परा के पाठ इसलिए विश्वसनीय नहीं हैं क्योंकि दादू पंथी, निरंजन पंथी, नानक पंथी सन्तों ने उन्हें अपनी मान्यताओं की सीमा के अनुकूल बनाया है। पूर्वी परम्परा में साम्प्रदायिक आग्रह के कारण पौराणिक तत्वों का समावेश होता रहा है और कबीरदास को अलौकिक महिमा से मंडित किया गया है।

कबीर के अध्ययन के लिए हमें इन सभी ग्रन्थों को सामने रखना होगा। इनमें से किसी एक के पाठ को ही कबीर वाणी का प्रामाणिक रूप नहीं माना जा सकता।

निष्कर्ष —

कबीर के जीवन के सम्बन्ध में हम इन निष्कर्षों पर आ जाते हैं ——

१) कबीर विक्रम की १५वीं शती में विद्यमान थे।

२) उनका अधिकांश जीवन काशी में गुजरा।

३) वे जाति के जुलाहा थे।

४) काशी में उन्हें अनेक विरोधों का सामना करना पड़ा।

५) उनका परिवार था । यद्यपि वे आध्यात्मिक साधना करते थे, तथापि उन्होंने गृहस्थ जीवन का त्याग नहीं किया था ।

६) मृत्यु से पहले वे काशी ` छोड़कर ` मगहर ` गये, वहीं उनकी मृत्यु हुई ।

७) उन्हें पर्याप्त लम्बी आयु प्राप्त हुई थी ।

८) उन पर योग साधना और वैष्णव भक्ति के गहरे संस्कार पड़े थे ।

उपर्युक्त तथ्यों के अतिरिक्त कबीर के विषय में जो कुछ कहा गया है, वह विवादास्पद है और उसके सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता ।

संदर्भ सूची

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशक प्रकाशन एवं संस्करण
१	कबीर	संपादक विजयेन्द्र स्नातक, लेख- "कबीर का जीवन-वृत" श्यामसुन्दर दास	९	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण १९७०
२	कबीर ग्रंथावली	संपादक डॉ. श्यामसुन्दर दास 'कबीर चरित्रबोध' से " प्रस्तावना"	१३	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी पंद्रहवाँ संस्करण सं. २०४१ वि.
३	युग पुरुष कबीर	डॉ. रामलाल वर्मा डॉ. रामचन्द्र वर्मा	२७	भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७८
४	ऍनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका	भाग-१३	२३४	संस्करण १९६३
५	कबीर ग्रंथावली	संपादक डॉ. श्यामसुन्दरदास " प्रस्तावना"	१८	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पंद्रहवाँ संस्करण सं. २०४१ वि.

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशक प्रकाशन एवं संस्करण
६.	युग पुरुष कबीर	डॉ.रामलाल वर्मा डॉ.रामचन्द्र वर्मा	३३	भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७८
७.	कबीर ग्रंथावली	संपादक डॉ.श्यामसुन्दर दास ' प्रस्तावना '	१४	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पंद्रहवीं संस्करण सं.२०४१ वि.
८	वही	,,	१७	,,
९	कबीर बीजक	डॉ.शुकदेव सिंह लेख ' साखी '	१६३	नीलाभ प्रकाशन प्रथम संस्करण १९७२
१०	कबीर ग्रंथावली	संपादक डॉ.श्यामसुन्दर दास प्रस्तावना	९८	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी पंद्रहवीं संस्करण सं.२०४१ वि.
११	कबीर	डॉ.राजेन्द्रमोहन भटनागर	१९	भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दरियागंज नयी दिल्ली, १९८५
१२	कबीर ग्रंथावली	संपादक डॉ.श्यामसुन्दर दास लेख ' साखी '	२००	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पंद्रहवीं संस्करण सं.२०४१ वि.

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशक प्रकाशन एवं संस्करण
१३	हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ	डॉ.शिवकुमार शर्मा	१४५-१४६	अशोक प्रकाशन दिल्ली,दशम संस्करण,१९८६
१४	कबीर मीमांसा	डॉ.रामचन्द्र तिवारी	४५	लोक भारती प्रकाशन,इलाहाबाद १,प्रथम संस्करण, १९७६
१५	- वही -	,,	४७	—,,—
१६	- वही -	,,	४८	— ,,—
१७	कबीर बीजक	डा.शुकदेवसिंह	७२	नीलाभ प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण : १९७२
१८	- वही -	,,	५२	—,,—